

धर्मबिन्दुप्रकरणम् (फोल्डर नं. ००१३४३)

मुख्य टाइटल	
ग्रन्थानुक्रम	
विषयानुक्रम: -----	१-३
प्रकाशकीय निवेदन -----	१-३
Foreword -----	1-3
प्रस्तावना -----	१-४१
आमुखम् -----	४२-४७
सम्पादनोपयुक्तग्रन्थसूचि: -----	१-६
धर्मबिन्दुप्रकरणं वृत्तिसहितम् -----	१-१६०
प्रथम अध्याय -----	२-२४
मङ्गलाचरणम् -----	२
धर्मस्य फलं स्वरूपं भैदो च -----	३-४
सामान्यतो गृहस्थधर्मः -----	५-२३
न्यायसम्पन्नविभवनिरूपणम् -----	५-८
योग्यविवाहनिरूपणम् -----	८-९
अष्टौ विवाहभेदाः -----	९
दृष्टादृष्टबाधाभीतता शिष्टचरितप्रशंसा इन्द्रियजयः -----	१०
उपप्लुतस्थानत्याग-स्वयोग्याश्रयण-साधुपरिग्रहाः -----	११
योग्यगृहवर्णनम् -----	१२-१३
देशाचारपालनम् अनुचितप्रवृत्ति-अवर्णवाद-अनुचितसंसर्गत्यागाः -----	१४
मातापितृपूजा, उद्वेगकारकप्रवृत्तित्यागः -----	१५
पोष्यपोषणम् -----	१६
देवातिथिदीनप्रतिपत्तिः -----	१७
भोजनविधिः -----	१८-१९
अदेशकालचर्यापरिहारः, लोकयात्रा -----	१९-२०
अतिसङ्गत्यागः, वृत्तस्थज्ञानवृद्धसेवा, त्रिवर्गप्रतिपत्तिः -----	२०-२१
प्रत्यहं धर्मश्रवणम्, अभिनिवेशत्यागः -----	२२
गुणपक्षपातः, अष्टौ धीगुणाः -----	२३
धर्मस्यैव करणीयत्वम् -----	२४
द्वितीय अध्यायः (विशेषतो गृहस्थधर्मविधिः) -----	२५-४९
धर्मदेशनार्हः -----	२५
धर्मदेशनाविधिः -----	२५-४८
आक्षेपणीकथास्वरूपम् -----	२८
ज्ञानाद्याचाराः -----	२८-३२

आचारपालनफलम्-----	३२-३३
असदाचारनिन्दा-तत्स्वरूप-फलादि-----	३३-३६
सज्जान-पुरुषकारप्रशंसादि-----	३६-३७
श्रुतधर्मपरीक्षायां कष-च्छेद-तापप्ररूपणम्-----	३७-४६
वरबोधिलाभप्ररूपणा, उपसंहारः-----	४६-४९
तृतीय अध्यायः-----	५०-८५
विशेषतो गृहस्थधर्मनिरूपणे सद्धर्मग्रहणार्हः-----	५०
धर्मप्रदानविधिः-आदौ सम्यग्दर्शनमनन्तरमणुव्रतादिदानं गृहपतिपुत्रमोक्षज्ञातात्-----	५१-५६
गृहपतिपुत्रमोक्षज्ञातम्-----	५३-५६
विधिस्वरूपम्-----	५६
अणुव्रतादिस्वरूपम्-----	५६-५८
अतिचारस्वरूपं तद्भेदाश्च-----	५८-७२
अतिचारजयोपायः-----	७३
अत्यन्तमुपयोगिनी हितशिक्षा (कर्तव्योपदेशः)-----	७३-८४
गृहस्थधर्मोपसंहारः-----	८४-८५
चतुर्थ अध्यायः-----	८६-९९
यतिः कथं भवतीत्यस्य वर्णनम्-----	८६
यतिवर्णनाधिकारे प्रव्रज्यार्हस्य गुणाः-----	८७-८८
गुरुपदार्हस्य गुणाः-----	८८-८९
गुणसंख्याविषये वायुप्रभृतिप्रवादितानां मतानि-----	८९-९२
प्रव्रज्यादानविधिः-----	९३
प्रव्रज्याग्रहणविधिः-----	९३-९६
प्रव्राजकगतो विधिः-----	९६-९८
उपसंहारः-----	९८-९९
पञ्चम अध्यायः-----	१००-११९
यतित्वस्य फलमुपायश्च-----	१००
सापेक्ष-निरपेक्षयतिभेदेन यतिधर्मद्वैविध्यम्-----	१००
सापेक्षयतिधर्मस्वरूपम्-----	१०१-११७
त्रिविधा भिक्षा-----	१०२
अप्रव्राज्याः-----	१०६
ब्रह्मचर्यस्य नव गुणयः-----	१०८-११०
निरपेक्षयतिधर्मस्वरूपम्-----	११७-११९
यतिधर्माराधनफलम्-----	११९
षष्ठम अध्यायः-----	१२०-१३६
सापेक्ष-निरपेक्षयतिधर्मयोर्विषयविभागः-----	१२१-१३३

उचितानुष्ठानस्य श्रेयस्करत्वम्-----	१२३-१३५
त्रिविधे ज्ञाने भावनमयज्ञानस्य तात्त्विकत्वम्-----	१२६-१२९
भगवत्स्मरणस्य फलम्-----	१२८-१२९
अकालौत्सुक्यं त्यक्तव्यम्-----	१३०-१३१
क्वचित् प्रवृत्तिमात्रमपि गोविन्दवाचकादीनामिव सफलम्-----	१३१-१३२
उपदेशसाफल्यम्-----	१३२-१३४
मासादिपर्यायवृद्ध्या सुखाभिवृद्धिः-----	१३५-१३६
सप्तम अध्यायः-----	१३७-१४६
विस्तरेण यतिधर्मफलवर्णनम्-----	१३७-१४६
अनन्तरफलम्-----	१३८
परम्पराफलम्-----	१३८-१४२
परिणामस्यैव बन्धकारणत्वं मोक्षकारणत्वं च-----	१४३-१४५
सर्वं शुभं धर्मस्य फलम्-----	१४५-१४६
अष्टम अध्यायः-----	१४७-१६०
शेषमुद्रगं धर्मफलम्-----	१४७-१५९
सामान्यचरमजन्मनि धर्मफलम्-----	१४८-१५१
क्षपकश्रेणिनिरूपणम्-----	१४९
तीर्थकृत्वलक्षणधर्मफलवर्णनम्-----	१५१-१५३
तीर्थकरातीर्थकरयोः साधारणं धर्मफलम्-----	१५३-१५९
मोक्षसुखस्य निरूपत्वम्-----	१५५-१५९
वृत्तिसमाप्तिः, लेखकप्रशस्तिः-----	१६०
सप्त परिशिष्टानि-----	१६१-२९७
प्रथमं परिशिष्टम्-धर्मबिन्दुसूत्रपाठ-----	१६१-२९७
द्वितीयं परिशिष्टम्-धर्मबिन्दुसूत्राणामकारादिक्रमः-----	१७५-१८५
तृतीयं परिशिष्टम्-धर्मबिन्दुवृत्तावुद्धतानां पाठानामकारादिक्रमः-----	१८६-१९५
चतुर्थं परिशिष्टम्-कतिपयानि विशिष्टानि टिप्पणानि-----	१९६-२७६
पञ्चमं परिशिष्टम्-धर्मबिन्दौ वृत्तौ च निर्दिष्टानां विशेषनाम्नमकारादिक्रमः-----	२७७-२७९
षष्ठं परिशिष्टम्-धर्मबिन्दुवृत्तावुल्लिखितानां-----	२८०-२९५
मरुदेवीकथा-----	२८०-२८१
स्थूलभद्रकथा-----	२८१
मेतार्यमुनिकथा-----	२८२-२८३
गोविन्दवाचककथा-----	२८३
सुन्दरीनन्दकथा-----	२८३-२८५
आर्यसुहस्तिदीक्षितद्रमककथा-----	२८५-२८६
भवदेवकथा-----	२८६-२९३

शालिभद्रकथा -----	२९३-२९५
भरतचक्रवर्तिकथा-----	२९५
सप्तमं परिशिष्टम् -----	२९६-३०५
उपदेशवृत्तौ विद्यमान आचार्यश्री हरिभद्रसूरि-मुनिचन्द्रसूरिविषयका उल्लेखाः-----	२९७-२९७
प्राभातिकजीवानुशास्तिकुलके -----	२९७-२९९
आचार्यश्रीवादीदेवसूरिविरचिता मुनिचन्द्राचार्यस्तुतिः... -----	२९९-३०२
गुरुविरहविलापस्य गुर्जरभाषायामनुवादः-----	३०२-३०५